

32. zu nahe treten; stark sein; nehmen; wohnen 31, v. 1.; vgl. पिप् caus. — Vgl. पेस्, विस्, वेस्, विप्र, बेप्.

पिस्पनु (vom desid. von स्पृष् adj. zu berühren im Begriff stehend: नलम् so v. a. im Begriff stehend in's Wasser zu gehen, sich abzuwaschen MBh. 12, 8338.

पिक्लि (partic. praet. pass. von 1. धा mit पि = अपि; s. das.) n. Bez. einer Redefigur: versteckte Andeutung, durch welche man einem Andern zu verstehen giebt, dass man sein Geheimniss kenne: पिक्लिं परवृत्तात्तज्ञानुः साकूतचेष्टितम् KUVĀLAJ. 146, a.

1. पी. पीयते trinken DĀTUP. 26, 32. तदापीयत तत्तेजो राजा वारिमयम् MBh. 3, 13611. Andere Formen, die gleichfalls auf पी zurückgeführt werden könnten, wie पीत्वा, पीय, पीत s. u. 1. पा.

2. पी. पि, प्या (प्ये DĀTUP. 22, 68. प्याप् 14, 17); पीयते RV. 1, 164, 25. पीयान् 79, 3. reduplicirte Formen im Veda: पीपिक्लिं, पियत्तम्, पीपेस्, अपीपेत्, अपीपेम, पीपयत्, पीपयतस्, partic. पीपयन्, अपीपयत्, partic. पीप्यान्; in der späteren Sprache, aber auch ved. प्यायते (ohne praep. nur im BHĀṬT.); perf. ved. पीपय, पीपेत्, पिययुस्, पियुस्; ved. und in der späteren Sprache पिये P 6, 1, 29. Vop. 8, 118. पियाते, पियिरे P., Sch.; aor. अप्यायि und अप्यायिष्ट 3, 1, 64. Vop. 8, 117. अप्यास्त 40, 117. (या) प्यासिषीमहि (VS. 2, 14. ÇĀṆKH. Çr. 1, 12, 12. GRĀJ. 2, 10 und wohl auch AV. 7, 81, 5, wo die Hdschr. प्याशिषीमहि lesen); partic. पीत (ved.; s. u. घ्रा), पीन und प्यान P. 6, 1, 28 nebst VĀRT. Vop. 26, 88. 89. 116. 1) schwellen, strotzen; voll sein, überfließen (वृद्धौ DĀTUP.): पीपार्यं धेनुर्जनीय कृविर्दे RV. 1, 153, 3. 10, 133, 7. मेघः 1, 181, 3. स्तनाविव पियतं जिवसे नः 2, 39, 6. उमे अस्मै पीपयतः समीची 27, 15. अप्यायिष्यु स्तयैर्न गार्वः 7, 23, 4. 27, 1. द्यावा च यत्र पीपयन्तका च 63, 2. पर्यः 9, 6, 7. पर्यसा 4, 3, 9. नृरिन् नृयैर्न पीपेत् 16, 21. वसुत्वना सदा पीपेत् दाशुषे VĀLAKH. 2, 6. धीर्वीपाय RV. 2, 2, 9. पीपाय स अर्चसा मर्त्यैषु 6, 10, 3. partic. perf. पीपिवैम्, f. पियुषी strotzend, voll, überlaufend, triefend; mit gen. und acc.: स्तन RV. 7, 96, 6. धेनु 2, 32, 3. पियुषी पर्यः 13, 1. धेनुर्न वत्सं यवसस्य पियुषी 16, 8. घनम् 8, 7, 19. इष् 7, 3, 13, 25. 9, 86, 18. 10, 143, 6. शिश्रुं न पियुषीव वति सिन्धुः 1, 186, 5. मधोर्धृतस्य पियुषीम् 8, 6, 43. 19, 84, 5. med.: उत वां गाव अप्याय पीपयत्त देवीः 1, 153, 4. 5, 34, 9. स्तनं न मधः पीपयत्त वतिः 1, 169, 4. 181, 5. 6. अपीपयत्त धेनवे न सूदाः 7, 36, 3. पूर्विरिकौ अधयत्पीप्यानाः 3, 1, 10. 10, 102, 11. नि ते नंसै पीप्यानेव गोषां wie ein Weib mit voller Brust 3, 33, 10. Nin. 2, 27. अताय्यस्योत्तमं सत्त्वमप्यायि कृतकृत्यवत् BHĀṬT. 6, 33. partic. पीन fett, feist, dick AK. 3, 2, 10. H. 448. HALĀJ. 2, 187. von verschiedenen Körpertheilen MBh. 3, 2196. 2393. 7, 33 13. R. 1, 1, 18. 9, 38. VARĀH. BRH. S. 58, 32. 67, 27. KATHĀS. 4, 6. BRAHMA P. 30, 19. KĀURAP. 2. P. 6, 1, 28, Sch. VJUTP. 12. कारश्च पीनतरलः mit einem grossen Mittelstein HARIV. 5436. पीनः oder प्यानः स्वेदः dicker Schweiss Vop. 26, 116. — 2) trans. schwellen —, strotzen machen; überlaufen machen, übersättigen: अस्यामिव (wohl verderbt aus अस्वामिव) पियत धेनुमूर्धनि RV. 2, 34, 6. त्वं न इषमापो न पीपयः 1, 63, 8. सोमम् 8, 1, 19. शयवे पियुर्गाम् 1, 116, 22. पियतं धियः 9, 19, 2. 5, 71, 2. धियं पीपयत् पर्यसेव धेनुम् 10, 64, 12. 16. सत्तमत्र नकिरस्मा अपीपेत् 31, 4. अपीपेमेक वृद्धिर्णम् 8, 53, 7. 88, 1. इमा ब्रह्मं पीपिक्लि सोमगाय VS. 14, 2. — intens. पेपीयते P. 6, 1, 29. Vop. 8, 118.

— अमि med. schwellen, strotzen: याः सुष्यन्त सुडुधाः सुधारा अमि स्वेन पर्यसा पीप्यानाः RV. 7, 36, 6.

— आ med., nur einzelne vedische Formen aus पी, gewöhnlich aus प्या gebildet. 1) anschwellen, gähren, steigen (von Flüssigkeiten); sich füllen; voll —, kräftig —, reich werden an (instr.): अप्यायमानो अमृताय सोम RV. 1, 91, 18. आ प्यायतामुत्रिया कृष्यसूदः 93, 12. अपियायानं शुक्रमर्धः 4, 27, 5. अप्यायमानाः प्रजया धनेन 10, 18, 2. यज्ञा देव प्रपिबन्ति तत् आ प्यायसे पुनः 83, 5. एषा ते अग्रे समितया वर्धस्व चा चं प्यायस्व VS. 2, 14. 38, 21. मनस्तु आ प्यायताम् 6, 15. अग्ररिवा प्यायतामयम् AV. 5, 29, 12. 6, 78, 1. 12, 3, 20. आ वयं प्यासिषीमहि गोभिरशैः 7, 81, 5. ÇĀT. Br. 1, 6, 2, 17. 4, 9. 12, 8, 2. (सोम) अप्यायस्वापत्नीयस्व 14, 9, 1, 19. TBR. 3, 1. 1, 3 in Z. f. d. K. d. M. 7, 266. त्रीणि स्रोतांसि यान्यस्मिन्नाप्यायन्ते पुनः पुनः MBh. 14, 989. अकृत्याप्यायते सूर्यः JĪĒN. 3, 71. जिव्योपायं तु भगवान्मम किञ्चित्करोतु सः — येनाप्याये HARIV. 14376. partic. अपीयत schwellend, strotzend, voll: अश्वः RV. 8, 9, 19. अपीयन् AV. 9, 1, 9. ÇĀT. Br. 4, 6, 2, 18. AIT. Br. 1, 17. गो MBh. 1, 3934. अन्धु, ऊधस् P. 6, 1, 28, VĀRT. (nach den Erklärern अपीयन् m. = अन्धु, अपीयन् n. = ऊधस्; vgl. u. अपीयन्). Vop. 26, 117. अप्यायश्चन्द्रमाः P. 6, 1, 28, Sch. अप्यायन्स्कन्धकाण्डास BHĀṬT. 5, 56. अप्यायानं किमेत्नेषा (उपवनम्) 9, 2. Vgl. अप्याय. — 2) voll machen, kräftigen: अप्यायद्यं तपसा तेजसा माम् MBh. 5, 508. — caus. Etwas anschwellen, voll machen, ergänzen; auffüllen, begiessen (namentlich mit Wasser den Soma, इलेन प्रोत्तपामाप्यायन्म् SĀJ. zu AIT. Br. 1, 26); nähren, kräftigen, beleben, erfrischen, erquickern, ermuntern: अग्रम् TS. 2, 3, 5, 3. अग्निं वा एनं पूर्णामसं आमोवास्यायां प्याययति 5, 2, 5. 3, 2, 2, 1. राजानम् AIT. Br. 1, 26. 3, 32. कथं यज्ञं पुनरप्याययेम ÇĀT. Br. 1, 5, 2, 24. अग्रिम 8, 2, 2. यथा मधु मधुकृत अप्याययेयुः 3, 4, 2, 14. 16. 8, 2, 2. ĀÇV. Çr. 4, 5. चमसम् AIT. Br. 7, 33. technisch auch von dem blossen Auftragen der auf das अप्यायान des Soma bezüglichen Sprüche, unter bestimmten Manipulationen mit der Schale; daher nach den Comm. so v. a. स्पृष्. अलाम्. KĪTJ. Çr. 8, 2, 6. Schol. zu 9, 12, 5. ÇĀṆKH. Çr. 7, 5, 17, 20. — रतः सुचा. 1, 17, 9. वाचम् ÇĀT. Br. 4, 6, 9. 6. तेजसा तव तेजश्च विज्ञुराप्याययिष्यति MBh. 3, 13542. यज्ञैर्ज्याकृत्कैश्चैव नित्यमाप्याययति नः (मानुषाः) HARIV. 7276. ततः प्राणः प्राडुरभूदाचमाप्याययन्पुनः MBh. 14, 647. तपोयोगबलेनैनाप्याययितुमर्हसि R. 1, 28, 30 (29, 19 GORR.). सोमः स्वरश्मिभिः शितैर्वीरुधौषधिमानवान् । अप्याययन्सदा MĀRK. P. 17, 12. 27, 22 (Spr. 2331). 116, 24. MBh. 45. RĪGĀ-TAR. 3, 66 (verbinde mit der Calc. Ausg. ऋषयाप्या°). 4, 48. BṚĀG. P. 4, 16, 9. med.: स आत्मन एवाग्रे स्तनयोः पय अप्याययां चक्रे ÇĀT. Br. 2, 5, 1, 3. 3, 9, 4, 3. fg. नृत्तमानं तृष्टिरिभूतान् — पिपेडादकप्रदानेन — सदाप्याययते MĀRK. P. 26, 31. pass.: अप्याययते सोमः सुचा. 1, 19, 12. 14. गर्भः 367, 12. तेन इन्तुराप्याययते MĀRK. P. 10, 78. fg. 99, 33, 25. अप्याययित ÇĀṆKH. Çr. 7, 7, 3. (पैः) तपी चाप्यायितः सोमः M. 9, 314 सैव क्वात्तिर्ममाप्याययिता द्युतिः SĀB. D. 130. व्याधिराप्याययित इव wie eine Krankheit, die man Ueberhand hat nehmen lassen, MBh. 2, 1960. (गर्भः) अप्याययिता गोभिः शतधा ववृधे शनैः BRAHMA-P. in LA. 89, 14. दमपत्यपि भर्तारमासाप्याययिता भृशम् । अर्धसंज्ञातसस्येव तोयं प्राप्य वसुधरा ॥ MBh. 3, 3007. शिशिरतीर्वायुभिराप्याययितशरीरः PANĀT. 9, 5. 162, 10. HIT. 25, 2. (शक्रः) देवाप्याययित अकृवे ermuntert MBh. 12, 10148. — Vgl. अप्यायान.